

कपिलमुनि प्रणीत
तत्त्व समास

(सांख्य दर्शन की नींव)

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Kapilamuni's
Tattva Samaasa
(The Foundation of Saṅkhya Darshan)

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

आचार्य सानन्द जी को शिक्षा व प्रवचनों के लिए कोटि धन्यवाद व नमन

Thanks to Acharya Saananda ji for his noble guidance.

सारांश

कपिलमुनि के द्वारा रचित “तत्त्व समास”, सांख्य दर्शन की नींव है। इसमें कपिल मुनि ने ब्रह्माण्ड में सभी ग्रहों, नक्षत्रों, प्रकृति, प्राणियों, भावनाओं, विचारों आदि के निर्माण में सहायक तत्त्वों का संक्षेप में वर्णन किया है। यह ज्ञान हमें कर्मफल से मुक्ति व सुख दुःख से ऊपर उठ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखाता है।

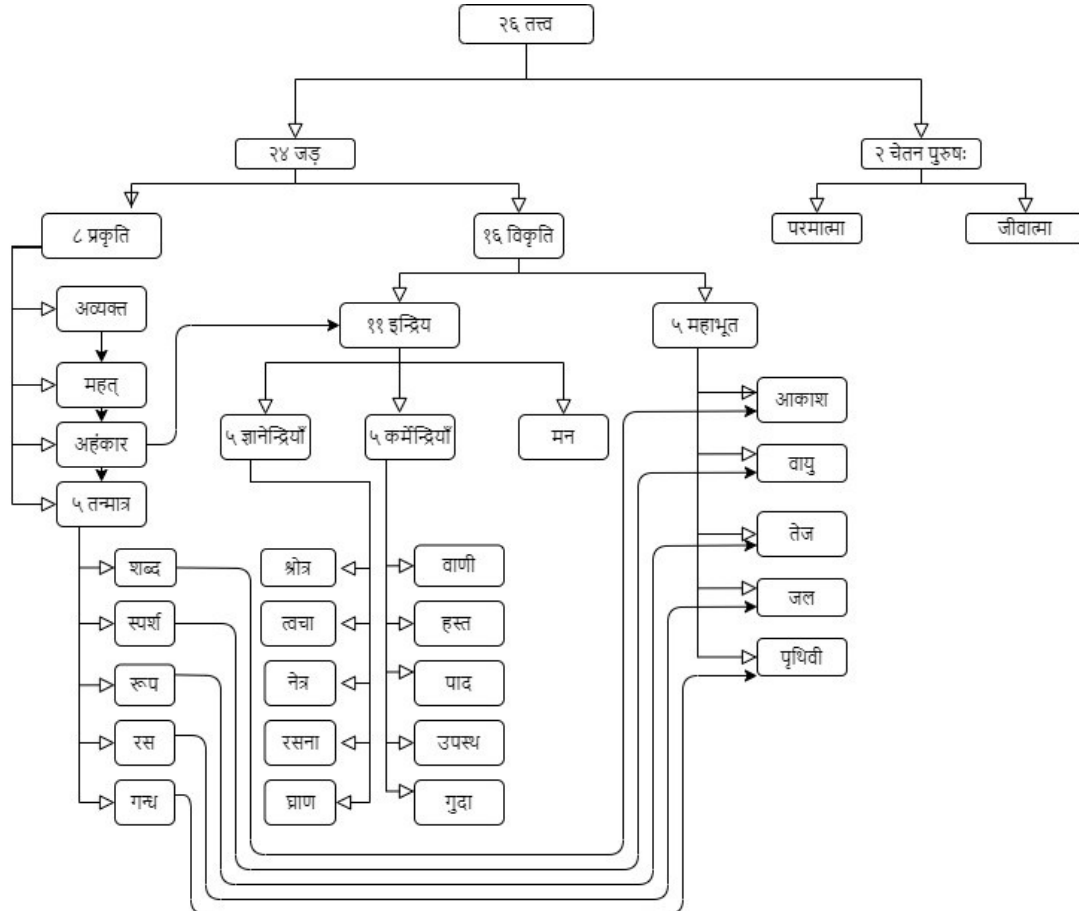
पहले सूत्र में तत्त्व ज्ञान का आरम्भ किया गया है।

अथातस्तत्त्व समासः ॥१॥

अथ । अतः । तत्त्व । समासः ॥१॥

तत्त्वों का ज्ञान ही दुःखों के निवारण का साधन है (अतः) इसलिए (अथ) अब (समासः) संक्षेप में ऋषि कपिलमुनि (तत्त्व) तत्त्वों के विषय में कहते हैं।

इस जगत में सब पदार्थ, जीव, प्रकृति, ज्ञान, भावनाएं, विचार आदि २६ मूल तत्त्वों से बने हैं। इन २६ तत्त्वों की व्याख्या अगले तीन सूत्रों में दी गई है।



Synopsis

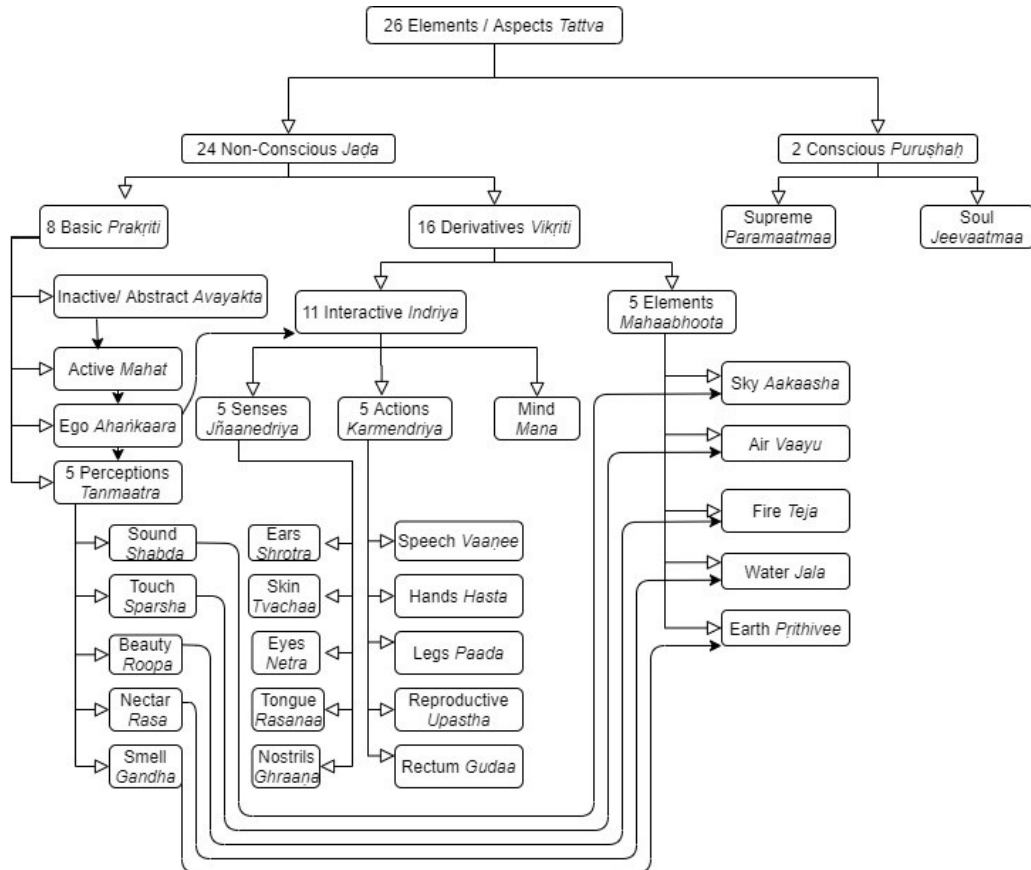
Kapilamuni's Tattva Samaasa is the foundation of Saṅkhya Darshan. In this Kapila Muni briefly describes various elements and aspects that in different proportions, form everything in this universe i.e. stars, planets, nature, living beings, thoughts, emotions etc. After understanding this it becomes easier for us to detach ourselves from the outcomes of our actions, rise above the feelings of happiness and sorrow and attain liberation from the bondages.

The first sutra starts the teaching of various aspects of reality.

1. atha-atas-tattva samaasaḥ

Knowledge of various elements and aspects of reality, is the way to cast aside the sorrows. Sage Kapilamuni (*ataḥ*) hence (*atha*) starts teaching the (*samaasaḥ*) summary of the (*tattva*) aspects of reality.

All of the matter, objects, living beings, nature, knowledge, emotions, thoughts etc. are composed of 26 elements/aspects. These 26 elements/aspects are described in the next three sutras.



दूसरे सूत्र में आठ प्रकृतियों के विषय में कहा गया है ।

अष्टौ प्रकृतयः ॥२॥

अष्टौ । प्रकृतयः ॥२॥

(अष्टौ) आठ (प्रकृतयः) प्रकृतियां हैं । “अव्यक्त” मूल प्रकृति है जो एकदम क्रियाहीन हैं । पुरुष अर्थात् परमात्मा की चेतना के सान्निध्य से जब मूल प्रकृति में क्रिया आरम्भ होती है तो उससे “महत्” तत्त्व अर्थात् बुद्धि (अन्तःकरण) उत्पन्न होती है । महत् तत्त्व में ‘मैं हूँ’ वृत्ति आने से अर्थात् अस्तित्व का भान होने से “अहङ्कार” नामक प्रकृति तत्त्व और अहङ्कार से पाँच “तन्मात्र” (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध) उत्पन्न हुए ।

तीसरे सूत्र में सोलह विकारों के विषय में कहा गया है ।

षोडश विकाराः ॥३॥

षोडश । विकाराः ॥३॥

आठ प्रकृतिओं से (षोडश) सोलह (विकाराः) विकार उत्पन्न हुए । इन विकारों से कोई नया तत्त्व नहीं बनता । पञ्च-तन्मात्र से पाँच महाभूत उत्पन्न हुए । हर महाभूत में पञ्च-तन्मात्र विद्यमान हैं परन्तु किसी एक तन्मात्रा की अधिकता है । आकाश में शब्द की, वायु में स्पर्श की, तेज में रूप की, जल में रस की और पृथिवी में गन्ध की । अहङ्कार से ११ इन्द्रियाँ उत्पन्न हुईं जिनके द्वारा चेतन व्यवहार करता है; ५ ज्ञानेन्द्रिय (नेत्र, श्रोत्र, घ्राण, रसना व त्वचा), ५ कर्मेन्द्रिय (वाणी, हस्त, पाद, उपस्थ व गुदा) और ग्यारहवाँ मन ।

चौथे सूत्र में चेतन तत्त्व का वर्णन है ।

पुरुषः ॥४॥

पुरुषः ॥४॥

(पुरुषः) पुरुष एकमात्र चेतन तत्त्व है । कुछ विद्वान् इसके दो भेद मानते हैं, परमात्मा व जीवात्मा । इसी के अनुसार तत्त्व पच्चीस या छब्बीस गिने जाते हैं । ऋषि कपिलमुनि ने पच्चीस तत्त्व ही बताए हैं ।

पाँचवे सूत्र में प्रकृति के तीन गुणों का वर्णन है।

त्रैगुण्यम् ॥५॥

त्रैगुण्यम् ॥५॥

The second sutra tells about eight basic elements/aspects.

2. aṣṭau prakṛitayaḥ

There exist (*aṣṭau*) eight (*prakṛitayaḥ*) basic elements/aspects. The inactive/abstract *avyakta* aspect defines a completely dormant and inactive state. This, when awakened through the interaction with the consciousness of the *puruṣh*, starts some activity and assumes the active *mahat* phase that signifies the beginning of the intelligence. With further activity, the emergence of ego i.e. *ahaṅkaara* (realization of existence of self) starts and from *ahaṅkaara* emerge five distinct perceptions i.e. *tanmaatras*, the *śabda* (sound), the *spārśha* (touch), the *roopa* (beauty), the *rasa* (nectar) and the *gandha* (smell).

The third sutra tells about the sixteens derivative elements/aspects.

3. ṣoḍaśa vikaaraaḥ

(*ṣoḍaśa*) Sixteen elements/aspects are (*vikaaraaḥ*) derived from the eight basic elements/aspects. These sixteen do not evolve further into new elements/aspects. The five *tanmaatras*, the basic aspects of perceptions evolve into the five basic elements that form the matter. Each of these five elements are composed of all of the five *tanmaatras* in different proportions, with one *tanmaatras* dominating the mix. *Tanmaatras śabda* (sound) dominates in the element *aakaasha* (ether), *spārśha* (touch) in *vaayu* (air), *roopa* (beauty) in *teja* (fire), *rasa* (nourishment) in *jala* (water) and *gandha* (smell) in the *pṛithivee* (earth). Eleven *indriya* (interactions points) are derived from *ahaṅkaara* (ego); five *jñāanendriya* (senses) i.e. *śrotra* (ears for hearing), *tvachaa* (skin for touch), *netra* (eyes for sight), *rasanaa* (tongue for taste) and *ghraṇa* (nostrils for smell); five *karmendriya* (organs of actions) i.e. *vaāṇee* (speech), *hasta* (hands), *paada* (legs), *upastha* (reproductive) and *gudaa* (rectum); and the eleventh is the *mana* (mind).

Fourth sutra discusses the conscious element/aspect.

4. puruṣhaḥ

(*puruṣhaḥ*) Soul is the only conscious element/aspect. Some scholars divide this into *paramaatmaa* (Supreme Soul) and *jeevaatmaa* (soul occupying the mortal body). Accordingly the elements can be numbered as twenty-five or twenty-six. Sage Kapilamuni has given the count as twenty-five.

Fifth sutra discusses the three qualities of nature.

5. traiguṇyam

सभी जड़ तत्त्वों के (त्रैगुण्यम्) तीन गुण, सत्त्व, रजस् और तमस् हैं । चेतन पुरुष अर्थात् परमात्मा व जीवात्मा इन तीनों गुणों से परे हैं । शेष सभी तत्त्वों में यह तीनों गुण रहते हैं, कोई ज्यादा कोई कम । तमस् गुण, अज्ञान, अन्धकार व निष्क्रियता की अधिकता के कारण, जड़ स्थिरता का कारक है । ज्ञान की क्रिया बढ़ने से रजस् गुण प्रधान होता है । जब ज्ञान का प्रकाश प्रधान हो जाता है तब सत्त्व गुण भी प्रधान हो जाता है ।

छठे सूत्र में सृष्टि और प्रलय के चक्र का विवरण है ।

सञ्चरः प्रति सञ्चरः ॥६॥

सम् । चरः । प्रति । सम् । चरः ॥६॥

जगत, प्रलय से सृष्टि और सृष्टि से प्रलय के चक्र से गुजरता है । प्रलय के दौर में तीनों गुण एक (सम्) समान (चरः) अवस्था में होते हैं । सृष्टि की हलचल में तीनों गुणों में से कोई गौण कोई प्रधान होता रहता है । सृष्टि के अंत में, प्रलय अवस्था में यह तीनों गुण (प्रति) फिर से (सम्) समान (चरः) अवस्था में आ जाते हैं ॥

सातवें सूत्र में तीन प्रकार के सुख व दुःख का वर्णन है ।

अध्यात्ममधिभूतमधि दैवञ्च ॥७॥

अधि । आत्मम् । अधि । भूतम् । अधि । दैवम् । च ॥७॥

हमारे सापेक्ष यह सृष्टि तीन भागों में बंटी है; वह (अधि) सब जो (आत्मम्) आत्मा के साथ सीधा सम्बन्ध रखते हैं जैसे देह, इन्द्रिय, अहङ्कार, बुद्धि आदि; वह (अधि) सब अन्य (भूतम्) जीव व मानव जिनसे हम व्यवहार करते हैं; (च) और जड़ प्रकृति की (अधि) सब (दैवम्) दिव्य शक्तियाँ । यही तीनों हमारे सुख दुःख के मूल कारण हैं । आध्यात्मिक सुख दुःख शारीरिक व मानसिक हो सकता है; जैसे शरीर निरोग व बलवान है तो सुख, अन्यथा दुःख और शुभ सङ्कल्पों व शान्ति से मानसिक सुख, अन्यथा दुःख । आधिभौतिक सुख कल्याणकारी जीवों से होता है; जैसे गाय, भैंस आदि से और दुःख सांप बिच्छू आदि से । आधिदैविक सुख प्राकृतिक शक्तियों का उचित मात्रा में होना है; जैसे सूर्य का प्रकाश, नदी का जल, वायु की शीतलता आदि और प्राकृतिक शक्तियों के अति प्रबल होने पर दुःख जैसे तूफान, बाढ़ आदि ।

अगले दस सूत्र अध्यात्म अर्थात् आत्मा से सीधा सम्बन्ध रखने वाली सृष्टि के विषय में विस्तार से वर्णन करते हैं ।

All non-conscious elements / aspects have (*traiguṇyam*) three qualities, *sattva*, *rajas* and *tamas*. The conscious element i.e. the soul and the supreme are beyond these three qualities. However, rest of the elements / aspects have all of these three qualities in different proportions. Dominance of *tamas* causes inactivity, weighed down by ignorance and darkness. *Rajas* dominates when there is activity and effort towards the emergence out of ignorance. Finally when the illumination from knowledge is prominent, *sattva* dominates.

Sixth sutra describes the cycle of creation and destruction.

6. sañ-charaḥ prati sañ-charaḥ

The Universe goes through the cycle of creation and destruction. In the destructive phase all three qualities are in an (*sam*) equilibrium (*charaḥ*) state. The activity during the creation and sustenance phase, causes an imbalance in the three qualities and at different times different qualities become dominant suppressing other qualities. However, they (*prati*) again come back to an (*sam*) equilibrium (*charaḥ*) state in the end with the start of destructive phase.

Seventh sutra describes the three sources of pleasures and sorrows.

7. adhy-aatmam-adhi-bhootam-adhi daivañ-cha

Relative to us the entire creation can be divided into three segments; first, (*adhi*) everything that serves or acts on the behalf of the (*aatmam*) soul directly, like our body, senses, intellect, ego etc.; second, (*adhi*) every (*bhootam*) living being around us whom we interact with; (*cha*) and third, (*adhi*) all of the (*daivam*) divine forces of nature. These three segments are also the root cause of all of our pleasures and sorrows. *Aadhyaatmika* pleasures and sorrows can be both physical and mental; physical pleasures come from a strong body devoid of any illness and sorrows from the lack of health; mental pleasures come from peace and benevolent thoughts and sorrows from the contrary. *Aadhibhautika* pleasures come from benevolent beings like cows, horses etc. The venomous creatures like snake, scorpion etc. are the source of the sorrows. Forces of nature when favorable provide *aadhidaivika* pleasures, like sunlight, proper and timely rain etc. However, if they become overactive, they bring sorrows and destruction as hurricanes, floods etc. do.

In the next ten sootras focus on the interaction of soul with the nature.

आठवें सूत्र में पाँच बुद्धियों का वर्णन है ।

पञ्चाभिवुद्धयः ॥८॥

पञ्च । अभि । बुद्धयः ॥८॥

(बुद्धयः) बुद्धि (अभि) की (पञ्च) पाँच वृत्तियाँ हैं; पहली “प्रमाण” अर्थात् यथार्थ ज्ञान पर आधारित सोच है; दूसरी “विपर्यय” अर्थात् अविद्या को मानना और यथार्थ ज्ञान के विरुद्ध विचार करना; तीसरी “विकल्प” जिसमें जान बूझकर कुछ को कुछ और कहना; चौथी “निद्रा” की बेसुधि में सुथ रहना; और पाँचवी “स्मृति” जो पहली चारों को याद रखना है ।

नौवें सूत्र में पाँच ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन है ।

पञ्च दृग्योनयः ॥९॥

पञ्च । दृक् । योनयः ॥९॥

बुद्धि (पञ्च) पाँच (दृग्योनयः) ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जानकारी प्राप्त करती है; आँखों से रूप का ज्ञान, कानों से शब्द का ज्ञान, नासिका से गन्ध का ज्ञान, जीभ से रस का ज्ञान और त्वचा से स्पर्श का ज्ञान ।

दसवें सूत्र में पाँच वायु का वर्णन है ।

पञ्चवायवः ॥१०॥

पञ्च । वायवः ॥१०॥

(वायवः) वायु के (पञ्च) पाँच प्रकार हैं । “प्राण” देह के ऊपरी भाग की इन्द्रियों को पोषित करता है । “अपान” देह के निचले भाग की इन्द्रियों के द्वारा शरीर को मल त्यागने में मदद करता है । “समान” देह के मध्य भाग में पाचन तन्त्र को व्यवस्थित रखता है । “व्यान” सूक्ष्म नाडियों में घूमता हुआ शरीर के अंश अंश में रक्त का सञ्चार करता है । और “उदान” जीवात्मा को शरीर व लोक से परे ले जाता है ।

ग्यारहवें सूत्र में पाँच कर्मेन्द्रियों का वर्णन है ।

पञ्चकर्मात्मानः ॥११॥

पञ्च । कर्म । आत्मानः ॥११॥

(आत्मानः) जीवात्मा कर्मेन्द्रियों द्वारा (पञ्च) पाँच प्रकार के भौतिक (कर्म) कर्म करता है; वाणी से बोलना, हाथों से पकड़ना, पैरों से चलना, उपस्थ से प्रजनन और गुदा से मल का त्याग ।

Eighth sutra details five types of intellects.

8. pañcha-abhi-buddhayah

Our mind has (*pañcha*) five (*abhi*) kinds of (*buddhayah*) intellects. First *pramaana* (proof and reasoning) is based on logic. Second *viparyaya* is contrary to logic and is based on ignorance. Third *vikalpa* (alternates) is based on tendency to substitute. Fourth *nidraa* (sleep) is maintaining a level of consciousness in the unconscious state of slumber. And the fifth is *smṛiti* (memory) that keeps a record of the prior four intellects.

Ninth sutra describes the five organs that intake information and convey it to intellect.

9. pañcha dṛig-yonayah

Mind intakes information via (*pañcha*) five (*dṛig-yonayah*) *jñāanendriya* (senses); *netra* (eyes) see the *roopa* (beauty), *shrotra* (ears) hear the *shabda* (sound), *ghraṇa* (nostrils) smell the *gandha* (smell), *rasanaa* (tongue) tastes the *rasa* (nectar), and *tvachaa* (skin) feels the *sparsha* (touch).

Tenth sutra advises about five functions of air.

10. pañcha-vaayavah

The (*vaayavah*) air nourishes us in (*pañcha*) five ways. *Praṇa* ensures the functioning of organs in the upper part of the body. *Apaana* strengthens the organs in the lower part of the body and ensures the detoxification of the body by the discharge of urine and feces. *Samaana* nourishes the digestive system in the middle part of the body. *Vyaana* is responsible for sending blood to the subtle parts of body. And *udaana* takes the soul beyond the body and its current realm of existence.

Eleventh sutra describes the five output organs through which the soul interacts with the physical realm.

11. pañcha-karm-aatmaanah

(*aatmaanah*) Soul interacts with the physical realm through the (*pañcha*) five organs of (*karma*) action; *vaṇee* (tongue) for speech, *hasta* (hands) for holding and related actions, *paada* (legs) for movement, *upastha* (reproductive organs) for procreation and *gudaa* (rectum) for fecal discharge.

बारहवें सूत्र में पाँच अविद्याओं के बन्धनों का वर्णन है ।

पञ्चपर्वा अविद्या ॥१२॥

पञ्च । पर्वा । अविद्या ॥१२॥

(पञ्च) पाँच प्रकार की (अविद्या) अविद्या (पर्वा) बन्धनों में बान्धती है; “अविद्या” आत्मा से ध्यान हटाकर शरीर के बन्धन में, “अस्मिता” अहङ्कार के बन्धन में, “राग” लोभ के बन्धन में, “द्वेष” ईर्ष्या के बन्धन में, और “अभिनिवेश” भय व मोह के बन्धन में ।

तेरहवें सूत्र में अट्ठाईस प्रकार की अशक्तियों का वर्णन है ।

अष्टाविंशतिधाऽशक्तिः ॥१३॥

अष्टाविंशति । धा । अशक्तिः ॥१३॥

(अष्टाविंशति) अट्ठाईस प्रकार की (अशक्तिः) अशक्तियाँ बुद्धि को (धा) ढांपती हैं । ग्यारह अशक्तियाँ ग्यारह इन्द्रियों में कुछ कमी होने के कारण हैं; जैसे नेत्र से अन्धा होना, कान से बहरा होना, घ्राण से गन्ध न आना, जिह्वा से स्वाद न मिलना, त्वचा में कुष्ठ होना, वाणी से गूंगा होना, हाथों से लूला होना, पैरों से लंगड़ा होना, उपस्थ से नपुंसक होना, गुदा में कब्ज होना और मन में अस्थिरता होना । चौदहवें सूत्र में वर्णित नौ तुष्टियाँ, निराश हो भाग्य पर छोड़ देने की मानसिकता के कारण, अशक्तियाँ ही हैं । पन्द्रहवें सूत्र में वर्णित आठ सिद्धियों का न होना भी अशक्ति है । इस प्रकार अशक्तियाँ कुल अट्ठाईस हैं ।

चौदहवें सूत्र में नौ प्रकार की तुष्टियों का वर्णन है ।

नवधा तुष्टिः ॥१४॥

नव । धा । तुष्टिः ॥१४॥

निराशा, भय, निष्क्रियता व पलायन की मानसिकता से उत्पन्न (नव) नौ (तुष्टिः) तुष्टियाँ मोक्ष मार्ग में (धा) बाधा डालती हैं । पाँच तुष्टियाँ बाह्य वस्तुओं व विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) के भोग न मिलने, मिलने पर खो जाने का भय और मिलने पर उससे हुई हिंसा से आत्मग्लानि के कारण हुई विरक्ति है । इस विरक्ति में नकारात्मक भाव ही है । इनके अतिरिक्त चार आध्यात्मिक तुष्टियाँ हैं जिनका कारण अविद्या व निष्क्रियता है । बिना स्वयं समाधि का प्रयास किए यह मानना, कि प्रकृति अपने आप ही आत्मा को परमात्मा से मिला देगी, ही “प्रकृति” तुष्टि है । यह मानते हुए कि इससे आत्मिक उत्थान हो जाएगा, मन के पूर्ण वैराग्य के बिना संन्यास लेना “उपादान” तुष्टि है । समय के साथ सब ठीक हो जाएगा, अनायास मुक्ति हो जाएगी, यह मानते रहना “काल” तुष्टि है ।

Twelfth sutra describes five types of tendencies that are contrary to Vedic knowledge.

12. pañcha-parvaa avidyaa

(*pañcha*) (*parvaa*) (*avidyaa*) Out of ignorance arise five type of tendencies that hinder our growth and tie us down to the mortal world. *Avidyaa* (ignorance) is staying away from spirituality and believing that this mortal body is our life. *Asmitaa* is giving in to the ego. *Raaga* is accentuating our greed. *Dveṣha* is giving in to the feeling of jealousy. And *abhi-nivesha* is being emotionally invested in and being attached to the mortal world.

Thirteenth sutra advises about the twenty-eight types of weaknesses.

13. aṣṭāa-viñshati-dhaa'shaktiḥ

(*aṣṭāaviñshati*) Twenty eight types of (*ashaktiḥ*) weaknesses (*dhaa*) elude the mind from good judgement. Any issues in the eleven interaction points constitute eleven weaknesses i.e. partial or complete blindness in eyes, partial or complete deafness in ears, leprosy or lack of sensation in skin, dumbness or speech defect, improper or lack of function in hands, improper or lack of function in legs, impotency, problems with fecal discharge and lunacy or unstable mind. Nine *tuṣṭi* (satisfactions or dejection) described in the fourteenth sutra, because of over indulgence or leaving things to fate, are nine weaknesses as well. Absence of eight virtues described in the fifteenth sutra, are eight weaknesses as well. Hence there are total twenty eight type of weaknesses.

Fourteenth sutra describes nine type of despairs and misconstrued notions.

14. nava-dhaa tuṣṭiḥ

The mental disposition of hopelessness, fear, complacency, escape etc. result in (*nava*) nine (*tuṣṭiḥ*) attitudes of indifference, that (*dhaa*) hinder the pathway to liberation. Five indifferences arise from five senses due to absence of means of pleasure, fear of losing the pleasures when available, and feeling of guilt knowing that the pleasures have caused harm to others or mother nature. This indifference has a negative root. Besides, the indifference from the material pleasures there are four *aadhyaatmika* (internal) manifestations of indifference. Without making any effort towards *samaadhee* (meditative state), believing that the Mother Nature is working towards the union of *aatmaa* (soul) with *paramaatmaa* (supreme) is called *prakṛiti tuṣṭi*. While the mind is not completely detached, entering *sannyasa* (renunciation phase) with a belief that it would lead to the upliftment of the soul is called *upaadaana tuṣṭi*. Believing that with time everything will be alright and liberation shall occur automatically

भाग्य के भरोसे बैठे रहना और यह सोचना की भाग्य होगा तो मुक्ति हो जाएगी “भाग्य” तुष्टि है । मनुष्य इन सभी तुष्टियों का प्रयोग कर्मफल में आसक्ति छोड़कर, मन में संतोष रख कर, आत्म-साक्षात्कार के लिए पन्द्रहवे सूत्र में वर्णित कर्मों को करता रहे तभी यह तुष्टियाँ सकारात्मक हो सकती हैं ।

पन्द्रहवे सूत्र में आठ सिद्धियों का वर्णन है ।

अष्टधा सिद्धिः ॥१५॥

अष्ट । धा । सिद्धिः ॥१५॥

धर्म के मार्ग पर (धा) ले जाने वाली (अष्ट) आठ (सिद्धिः) सिद्धियाँ हैं । “ऊह” अर्थात् पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण विवेक पूर्वक विचार कर सद्कर्म की ओर प्रेरित होना । “शब्द” अर्थात् ज्ञानवान गुरु के उपदेश से सद्कर्म की ओर प्रेरित होना । वेदादि के “अध्ययन” से सद्कर्म की ओर प्रेरित होना । “सुहृत्प्राप्ति” अर्थात् सत्संग से प्राप्त ज्ञान से सद्कर्म की ओर प्रेरित होना । और पात्र सुपात्र का निर्णय कर “दान” देने का सद्कर्म करना । यह पाँच मूल सिद्धियाँ हैं । इन पाँच सिद्धिपूर्ण उपायों के फलस्वरूप तीन अन्य सिद्धियाँ उत्पन्न होती हैं; “आध्यात्मिक दुःखहान”, “आधिभौतिक दुःखहान” व “आधिदैविक दुःखहान”, अर्थात् सृष्टि के तीनों भागों से मिलने वाले दुःखों का निवारण ।

सोलहवे सूत्र में दस मूलभूत गुणों व स्वभावों का वर्णन है ।

दश मौलिकार्थाः ॥१६॥

दश । मौलिक । अर्थाः ॥१६॥

अव्यक्त प्रकृति और पुरुष के (दश) दस (मौलिक) मूलभूत (अर्थाः) गुण व स्वभाव हैं । इनमें से चार स्वभाव अव्यक्त और पुरुष दोनों में पाए जाते हैं; दोनों निरन्तर “अस्तित्व” में हैं, दोनों परस्पर संयुक्त होते हैं व इसी “योग” से सृष्टि रचना होती है, प्रलय या मोक्ष में दोनों का “वियोग” होता है अर्थात् दोनों अलग हो जाते हैं, और “शेषवृत्तित्व” अर्थात् सृष्टि के नाश होने पर भी दोनों बचे रहते हैं । अव्यक्त में तीन स्वभाव मुख्यतः पाए जाते हैं; “एकत्व” अर्थात् अव्यक्त प्रकृति एक है, “अर्थवत्त्व” अर्थात् अव्यक्त पुरुष के भोग व अपवर्ग के लिए है, “पारार्थ्य” अर्थात् प्रकृति पुरुष के लिए कार्य करती है स्वयं के लिए नहीं । पुरुष में भी तीन गुण पाए जाते हैं; “अन्यता” अर्थात् प्रत्येक आत्मा अलग अलग

at the right time is called *kaala tuṣṭi*. Believing in destiny and thinking that if liberation is my destiny then it will happen automatically is called *bhaagya tuṣṭi*.

We can turn these *tuṣṭi* in a positive force only when we utilize them to detach ourselves from the fruits of our action, while continuing to work on our spiritual awakening through the *siddhi* described in the fifteenth sutra.

Fifteenth sutra describes eight virtues.

15. aṣṭa-dhaa siddhiḥ

(*aṣṭa*) Eight (*siddhiḥ*) virtues guide and help us to (*dhaa*) maintain ourselves on a righteous path; *ooha* is getting influenced to perform righteous actions by the wisdom acquired in prior births, *shabda* is getting influenced to perform righteous actions by teachings from a *guru*, *adhyayana* is studying the Vedas and getting influenced to perform righteous actions by virtue of the knowledge acquired, *suhṛitpraapti* is getting influenced to perform righteous actions by the company of virtuous souls, and *daana* is donating to worthy causes. These five virtues in turn create a virtuous cycle and result in three other virtues namely *aadhyaatmika duḥkhahaana*, *aadhibhautika duḥkhahaana* and *aadhidaivika duḥkhahaana* i.e. elimination of sorrows from the three segments of the creation.

Sixteenth sutra describes ten basic tendencies/qualities of the nature and the *puruṣa*.

16. dasa maulika-arthaah

The *avyakta* nature and *puruṣa* together have (*dasha*) ten (*maulika*) basic (*arthaah*) tendencies and qualities. Four of these tendencies are found both in the *avyakta* and the *puruṣa*; both are continuously in *astitva* (existence), both come together and this *yoga* (union) leads to the creation, during *mokṣha* or dissolution they *viyoga* (separate), *sheṣhavṛittitva* i.e. they remain in existence even after the dissolution of the creation. *Avyakta* has three other tendencies; *ekatava* i.e. the nature acts as a single whole, *arthavatva* i.e. the nature has a goal which is the upliftment of the *puruṣa*, *paaraarthyā* i.e. the nature is selfless and works solely for *puruṣa*. *Puruṣa* also has three other qualities; *anyataa* i.e. each and every soul is different, *akarṣitva* i.e. *puruṣa* is not the performer but just a director, and *bahutva* i.e. there are numerous souls.

है, “अकर्तृत्व” अर्थात् पुरुष केवल द्रष्टा और निर्देशक है कर्ता नहीं, और “बहुत्व” अर्थात् आत्माएं संख्या में बहुत सारी हैं ।

सत्रहवे सूत्र में प्रकृति की पुरुष के प्रति अनुकूलता का वर्णन है ।

अनुग्रहः सर्गः ॥१७॥

अनुग्रहः । सर्गः ॥१७॥

अव्यक्त प्रकृति पुरुष के (अनुग्रहः) अनुकूल हो (सर्गः) सृष्टि में सहयोग करती है । अव्यक्त प्रकृति से बने अन्य तत्त्वों, जैसे अहङ्कार, इन्द्रिय, महाभूत आदि, से ही देह व बुद्धि आदि का निर्माण होता है । और निर्माण के बाद यही प्रकृति देह का पोषण भी करती है । अतः प्रकृति की सारी रचना पुरुष के लिए है ।

अठाहरवे सूत्र में चौदह प्रकार के प्राणियों का वर्णन है ।

चतुर्दशविधो भूत सर्गः ॥१८॥

चतुर्दश । विधः । भूत । सर्गः ॥१८॥

(सर्गः) सृष्टि में (चतुर्दश) चौदह (विधः) प्रकार के (भूत) प्राणी हैं । आठ उत्कृष्ट हैं; ब्राह्म, प्राजापत्य, ऐन्द्र, दैव, गान्धर्व, पित्र्य, विदेह और प्रकृतिलय । नौवा मनुष्य है । और पाँच श्रेणियाँ पशु, पक्षी, सरीसृप (रेंगने वाले), कीट और स्थावर (न चल पाने वाले) की हैं ।

उन्नीसवे सूत्र में तीन बन्धनों का वर्णन है ।

त्रिविधो बन्धः ॥१९॥

त्रि । विधः । बन्धः ॥१९॥

सद्कर्म में लगा हुआ व्यक्ति भी संसार के बन्धनों से मुक्त नहीं हो पाता । यह (बन्धः) बन्धन (त्रि) तीन (विधः) प्रकार के हैं । जो मनुष्य फल कामना से प्रेरित केवल इष्ट कर्मों को करता है वह “दाक्षणिक” बन्धन में बन्धा है । जो मनुष्य ध्यान अवस्था में भी मन के विकारों से आगे ध्यान नहीं लगा पाता वह “वैकारिक” बन्धन में बन्धा है । जो मनुष्य ध्यान अवस्था में प्रकृति के तत्त्वों पर तो ध्यान लगा पाता है परन्तु परमात्मा तक ध्यान को नहीं ले जा पाता वह “प्राकृतिक” बन्धन में बन्धा है ।

बीसवे सूत्र में तीन प्रकार की मुक्तियों का वर्णन है ।

त्रिविधो मोक्षः ॥२०॥

त्रि । विधः । मोक्षः ॥२०॥

Seventeenth sutra describes the nature's favoritism for puruṣha.

17. anugrahaḥ sargaḥ

The non-conscious, abstract and inactive *avayakta prakṛiti* is favorable to the conscious *puruṣha* and (*anugrahaḥ*) cooperates in the (*sargaḥ*) *sṛiṣṭi* (Creation). Mortal body, mind, thoughts etc. are composed of the various elements / aspects like *ahaṅkāra*, *indriya*, *mahaabhoota* etc., which in turn are derived from the *avayakta prakṛiti*. After creation, the Mother Nature and its elements nourish the body. Hence the whole nature is meant to be in harmony with the *puruṣha*.

Eighteenth sutra describes fourteen types of beings.

18. chaturdasha-vidho bhoota sargaḥ

(*sargaḥ*) The Creation has (*chaturdasha*) fourteen (*vidhaḥ*) types of (*bhoota*) beings. Eight of them are elevated because of their spiritual capacities. These are *braahma*, *praajaapatya*, *aindra*, *daiva*, *gaandharva*, *pitrya*, *videha* and *prakṛitilaya*. Ninth is the *manuṣhya* (human). Other five categories belong to *pashu* (animals), *pakṣhee* (birds), *sarisṛipa* (crawling creatures), *keeṭa* (insects) and *sthaavara* (immovable).

Nineteenth sutra describes three types of bondages.

19. tri-vidho bandhaḥ

Even those who are engaged in virtuous deeds at times do not attain liberation from the bondages of the material world. These (*bandhaḥ*) bondages are of (*tri*) three (*vidhaḥ*) types. An individual who performs deeds expecting a defined outcome in return experiences the *daakṣhaṇika* form of bondage. An individual who is unable to meditate beyond the convolutions of the mind experiences the *vaikaarika* form of bondage. And an individual who is able to meditate on various aspects of nature but, in the meditative state, is not able to go beyond to the supreme experiences the *praakṛitika* form of bondage

Twentieth sutra advises on three types of liberation.

20. tri-vidho mokṣhaḥ

उन्नीसवे सूत्र में बतलाए तीन बन्धनों से मुक्ति ही (त्रि) तीन (विधः) प्रकार के (मोक्षः) मोक्ष हैं । निष्काम होने से दाक्षिणक बन्धन छूट जाता है । विकृति और प्रकृति से चित्त हटाकर ध्यान लगाने से वह दोनों बन्धन भी छूट जाते हैं ।

इक्कीसवे सूत्र में तीन प्रकार के प्रमाणों का ज्ञान है।

त्रिविधं प्रमाणम् ॥२१॥

त्रि । विधम् । प्रमाणम् ॥२१॥

(प्रमाणम्) प्रमाण (त्रि) तीन (विधम्) प्रकार के हैं; “प्रत्यक्ष” जिसका ज्ञान स्वयं की किसी इन्द्रिय के द्वारा हुआ हो, “अनुमान” जो सूझबूझ द्वारा किसी चिन्ह से समझ लिया जाए, और “आप्तवचन” जो किसी विशेषज्ञ सत्यवक्ता द्वारा बताया गया हो ।

बाईसवे सूत्र में तत्त्वज्ञान से दुःखों के निवारण का विषय है ।

एतत् सम्यक् ज्ञात्वा कृतकृत्यः स्यात् ।

न पुनस्त्रिविधेन दुःखेनाभिभूयते ॥२२॥

एतत् । सम्यक् । ज्ञात्वा । कृत । अकृत्यः । स्यात् ।

न । पुनः । त्रि । विधेन । दुःखेन । अभिभूयते ॥२२॥

(एतत्) यह (सम्यक्) ठीक प्रकार से (ज्ञात्वा) जानकर मनुष्य (कृत) कर्म के बन्धनों से (अकृत्यः) मुक्त (स्यात्) हो जाता है और वह (पुनः) फिर (त्रि) तीन (विधेन) प्रकार के, आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक (दुःखेन) दुःखों से (अभिभूयते) भ्रम में (न) नहीं पड़ता ।

॥इति तत्त्वसमास समाप्तः॥

The three types of bondages identified in the nineteenth sutra lead to (*tri*) three (*vidhaḥ*) types of (*mokṣhaḥ*) liberation as well. Detachment from the fruits of action liberates from the *daakṣhaṇika* bondage. Focusing one's mind beyond the convolutions of mind and the nature liberates from the *vaikaarika* and *praakṛitika* bondages respectively.

Twenty-first sutra describes three types of methods for determining the fact.

21. trividham pramaaṇam

There are (*tri*) three (*vidham*) kinds of (*pramaaṇam*) methods for determining the facts; *pratyakṣha* when the fact has been directly experienced by one of our senses, *anumaana* when the determination is based on the circumstantial evidences, and *aapta-vachana* when it is provided by a truthful expert.

Twenty-second sutra advises that this knowledge can relieve one from sorrows.

22. etat samyaka jñaatvaa kṛit-akṛityaḥ syaat

na punas-tri-vidhena duḥkhena-abhi-bhooyate

(*jñaatvaa*) By knowing (*etat*) this (*samyaka*) properly, one (*syaat*) is (*akṛityaḥ*) relieved from the bondages of attachment to the fruits of one's (*kṛit*) action. One is (*punas*) also (*na*) not (*abhibhooyate*) bothered by the (*tri*) three (*vidhena*) types of (*duḥkhena*) sorrows i.e. *aadhyaatmika* (bodily and mental), *aadhibhautika* (from other beings) and *aadhidaivika* (from the divine forces of nature).

iti tattvasamaasa samaaptaḥ

Here ends the summary of all elements / aspects.